'साहित्य के प्रभाव की बात करते वक्त यह भी याद रखना जरूरी कि साहित्य पढ़नेवाले कितने'

कोलकाता. महानगर स्थित साहित्य अकादमी कोलकाता के सभागार में 'बांग्ला साहित्य और भारतीय संग्राम' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी शनिवार को शुरू हुई. इसका उद्घाटन नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय, कोलकाता के कुलपति प्रो रंजन चक्रवर्ती ने किया. उद्घाटन भाषण में उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की प्रारंभिक अवधारणा और बांग्ला साहित्य पर इसके प्रभाव की चर्चा करते हुए 1920-30 के दौरान प्रकाशित बांग्ला साहित्य में उसके चित्रण को संदर्भित किया. संगोष्ठी का बीज भाषण करते हुए जानेमाने विद्वान शमीक बंद्योपाध्याय ने स्वतंत्रता की अवधारणा, संदर्भ और महत्ता पर विचार करते हुए बंकिमचंद्र के 'बंगदर्शन', रवींद्रनाथ ठाकुर के 'नैवेद्य' और काजी नजरूल इस्लाम के 'सर्वहारा' को संदर्भित किया.

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए जानेमाने बांग्ला साहित्यकार व अकादमी

के सदस्य शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने कहा कि साहित्य के प्रभाव की बात करते हुए हमें यह भी याद रखने की जरूरत है कि आखिर साहित्य पढ़नेवालों की संख्या कितनी थी. आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादमी के सचिव डॉ के श्रीनिवासराव ने रंगलाल से आरंभ कर भारतीय स्वतंत्रता विषयक अभिव्यक्तियों को मुखर करनेवाले साहित्यकारों का अद्यतन उल्लेख किया. संगोष्ठी में आरंभिक वक्तव्य रखते हुए अकादमी में बांग्ला भाषा परामर्श मंडल के संयोजक डॉ सुबोध सरकार ने रवींद्रनाथ ठाकुर के 'घरे-बाइरे' और नजरूल इस्लाम की 'विद्रोही' कविता तथा रवींद्रनाथ एवं गांधी को संदर्भित करते हुए अपनी बात रखी. सत्र का संचालन अकादमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ देवेंद्र कुमार देवेश ने किया. संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'बांग्ला साहित्य और स्वतंत्रता संग्रामः अभिव्यक्ति एवं स्वीकार्यता' पर केंद्रित था. इस सत्र में प्रो अचिंत्य विश्वास, डॉ पायल बसु और प्रो सुमिता चक्रवर्ती ने अपने आलेख प्रस्तुत किये. संगोष्ठी का द्वितीय सत्र '1947ः तत्कालीन बांग्ला साहित्यकार, चिंतक एवं स्वतंत्रता संग्रामीः पारस्परिक संबंध' विषय पर केंद्रित था, जिसके अंतर्गत अभ्र घोष, बारिदबरण घोष एवं गौतम घोषाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए. संगोष्ठी का तृतीय सत्र '1947 के पूर्ववर्ती बांग्ला साहित्य में स्वतंत्रता संघर्ष का चित्रण' विषय पर केंद्रित था, जिसमें अनुराधा राय, देवेश चट्टोपाध्याय और उर्मि रायचौधरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए. सत्रों का संचालन अकादमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ मिहिर कुमार साहू ने किया. प्रथम दिन की अंतिम प्रस्तुति के रूप में फिल्म्स डिवीजन, भारत सरकार के सौजन्य से 'इंडिया इंडिपेंडेंट' शीर्षक वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया.

प्रभात खबर
Sun, 16 October 2022
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/70544943